AIDWA

मई न्यूज लेटर

अनुक्रमणिका

- संपादकीय
- मौत का चल रहा भयानक नृत्य– मरियम ढवले
- रेणू प्रकाष की दो कवितायें
- उत्तर प्रदेष में कोविड का हमला – मधु गर्ग
- एलिजाबेथ आर्मस्ट्रांग की पुस्तक की समीक्षा – सुभाशिणी अली
- फिल्म समीक्षा – ''पगलैट'' – मधु गर्ग
- मानव इतिहास में आपदायें – संध्या षैली
- कविता – मधु गर्ग
- आस्था का कुंभ...– सुनीता पांडे

संपादकीय

हमारे अपने कितने साथी नहीं रहे। झारखंड की हमारे संगठन की कोषाध्यक्ष, रेणु, कोरोना से लड़ते–लड़ते, दम तोड़ चुकी हैं। एडवा की केंद्रीय कार्यकारिणी की सदस्य, इंद्राणी मजूमदार और सी पी एम के महामंत्री, सीताराम येचूरी, के पुत्र, आशीष, 35 वर्ष की उम्र मे ही कोरोना के भेंट चढ़ गए। उत्तर प्रदेश की हमारी पूर्व मंत्री, मालती देवी, ने अपना पति खो दिया। हर राज्य की न जाने कितनी कार्यकर्ताओं ने अपनी जान खोई है या फिर उनके परिवारजन उनसे जुदा हुए हैं। इन सबको हम मिलकर अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

मार्च का महीना अब खतरनाक स्थितियों का संकेत देने लगा है और अप्रैल के आते आते कयामत के आसार का एहसास होने लगता है। पिछले साल भी ऐसा हुआ था और अबकी साल भी ऐसा ही हो रहा है। तब भी मोदी सरकार जनता के असीम दुख के लिए जिम्मेदार थी और आज भी है।

कोरोना की यह दूसरी लहर बता रही है कि पिछली लहर से सरकार ने कुछ भी नहीं सीखा। इसके भयानक परिणामों के शुरुआती पन्ने ही खुले हैं।

कोरोना एक जानलेवा महामारी है जिससे निबटने के लिए सरकार को बड़ी जिम्मेदारियाँ निभानी पड़ती हैं। जिन सरकारों ने इन जिम्मेदारियों को निभाने का काम किया है, उनकी जनता को जल्द राहत मिली है, उसको कम कीमत चुकानी पड़ी है। स्कैंडिनेविया के देश, न्यूजीलैंड, छोटा सा वियतनाम, चारों तरफ से घिरा क्यूबा, चीन जहां जहां स्वास्थ सेवाएँ पूरी तरह से निजीकरण के प्रभाव से बच पायी हैं, वहाँ वहाँ जनता को बचाने का काम किया जा सका है। हमारे अपने देश मे, केरल इस बात की जबरदस्त मिसाल है कि जहां सरकार ने स्वास्थ सेवाओं की मजबूती पर साधन और पैसा जुटाने का काम किया है वहाँ हर व्यक्ति का इलाज हासिल करने की संभावना को सुनिश्चित किया गया है।

भारत सरकार ने, लेकिन, लगातार उन गलतियों को दोहराया है जिनका खामियाजा बेबस जनता भर रही है। जनता को स्वास्थ लाभ पहुंचाना उसकी प्राथमिकता है ही नहीं, न पिछले साल थी और न अबके साल है।

पिछले साल, पहली जनवरी को भारत मे सबसे पहला कोरोना–पीड़ित मरीज केरल पहुंचा था। केरल की सरकार पूरी तरह से तैयार थी और लगातार अपनी जनता को भी तैयार कर रही थी। उसी समय अगर हवाई अड्डे और हवाई जहाजों की उड़ान बंद कर दी गयी होती, तो बहुत कुछ बच जाता। उसी समय अगर वैज्ञानिक तरीके से इस महामारी से निबटने की बात लगातार जनता को समझायी जाती तो बहुत कुछ बच जाता। लेकिन मोदी को तो ट्रम्प का स्वागत करना था और फरवरी के अंत मे ट्रम्प अपनी पूरी टीम के साथ आए। उनके स्वागत मे अहमदाबाद की सड़कों पर 1 लाख लोगों को खड़ा कर दिया गया और उनको सुनने के लिए स्टेडियम मे भी 1 लाख लोग पहुंचाए गए। उसके बाद, मध्य प्रदेश मे कांग्रेस की सरकार को गिराना था। दलबदलू विधायकों को हवाई जहाज से सुरक्षित स्थान पहुंचाना था, फिर वापस लाकर भाजपा की सरकार को गद्दी पर बिठाना था। जब यह सब हो गया, तो कोरोना की याद

आई। थाली बजवाई गयी, दिया जलवाया गया और फिर, एक बैंग !! बगैर किसी चेतावनी के, बड़ा ही कठोर लाक डाउन लागू कर दिया गया।

सरकार की लापरवाही की बहुत आलोचना हुई लेकिन आम जनता ने इस आलोचना को गंभीरता से नहीं लिया। उसको तो कोरोना के फैलने की 'असली' वजह समझा दी गयी कि इसे तो तबलीगी जमात के लोग ही फैला रहे हैं, साजिश के तहत फैला रहे हैं, 'कोरोना जेहाद' चला रहे हैं। सरकारी प्रवक्ता, मंत्री, चैनलों के एंकर सबने दिन रात यही रट लगाई और एक बड़े झूठ को एक बड़े सच मे बदल दिया। जमात मे भाग लेने वालों के पीछे पुलिस–प्रशासन लग गया, उन्हे जेलों मे ठूसा गया। रोज उनके बारे मे नई कहानियाँ गढ़ी गईं कि वे अस्पताल मे नंगे घूम रहे हैं, नर्सों के साथ बेहूदगी कर रहे हैं, बिरयानी की फरमाइश कर रहे हैं। देश भर मे मुसलमानों के खिलाफ नफरत की आँधी चल पड़ी। कहीं सब्जी वाले पीटे गया, कहीं दुकानदार से खरीदना बंद हो गया, कहीं इलाज से वंचित रखा गया, कहीं मार ही डाला गया। आम तौर पर मान लिया गया कि कोरोना से पैदा मुसीबतों के लिए सरकार नहीं, मुसलमान जिम्मेदार हैं। अपने घर तक पैदल लौटने वाले भूखे मजदूर ने अपने पैरों के छालों के लिए भी उन्ही को जिम्मेदार ठहराया।

सांप्रदायिक ध्रुवीकरण ने केवल सरकार की छवि को ही नहीं बचाया, बल्कि सरकार को अल्पसंख्यकों पर ही नहीं, जनता के हर हिस्से पर हमला करने का पूरा मौका भी दे डाला। मजदूरों, किसानों, महिलाओं, शिक्षकों, छात्रों सबके अधिकार छीन लिए सरकार ने। ध्रुवीकरण का शिकार अल्पसंख्यक तो बने ही लेकिन उससे पैदा माहौल मे सरकार की मार सब पर पड़ी, कोई नहीं बचा।

अब जब कोरोना फिर पलटकर आया है तो इस नई आफत के लिए सरकार की तमाम गलतियाँ सामने आ रही हैं। स्वास्थ सेवाओं मे जरा भी विस्तार नहीं किया गया है। वाह वाही लूटने के लिए साढ़े 6 करोड़ वैक्सीन दूसरे देशों को दान मे दे दिये गये हैं। 60,000 टन से अधिक आक्सीजन का निर्यात कर दिया गया है। 4 राज्यों और एक केंद्र शासित प्रदेश मे हो रहे चुनाव के लिए किसी तरह के नियम लागू नहीं किए गए और बंगाल मे चुनाव 8 चरणो तक चलाया गया। डेढ़ महीने तक प्रधान मंत्री और गृह मंत्री चुनाव प्रचार मे ही व्यस्त रहे और बंगाल के चुनाव को जीतने के लिए सब कुछ दांव पर लगा दिया गया, बंगाल की जनता का स्वास्थ भी। सोने मे सुहागा, हरिद्वार मे महाकुंभ, जो अगले साल होना था, इसी साल करवा दिया गया। देश भर के लोगों को गंगा नहाने का निमंत्रण दिया गया और 14 लाख से अधिक लोग पहुँच भी गए। गंगा मे खूब डुबकियाँ लगाई गईं, कुल्ला किया गया, थूका गया और जोरदार नारे लगाए गए। जाहिर है कि यह सब मास्क पहनकर नहीं किया जा सकता था।

अब चारों तरफ हाहाकार मची हुई है। भारत का प्रतीक जलती चिता बन गयी है। बिलखते लोगों की तस्वीर बन गयी है। दवा, बिस्तर और आक्सीजन के लिए दौड़ते–भागते हांफते लोगों की सूरतें बन गयी हैं।

अबकी बार सरकार अपने आपको बचा नहीं पा रही है। आज उसके अलावा जनता के गुस्से के निशाने पर और कोई नहीं है। सांप्रदायिक ध्रुवीकरण का खेल अबकी बार नहीं चल पाया है।

इस भयानक स्थिति मे हम सब बहुत कुछ झेल रहे हैं। असीम दुख झेल रहे हैं। दूसरों की न थमने वाली मांगो की पूर्ति के प्रयास की निराशा को झेल रहे हैं। जितनी मदद की जा सकती है, उसे पूरा करने की परेशानियाँ भी झेल रहे हैं।

लेकिन, इस सबके बीच, एक बड़ा सबक लेने और दूसरों के साथ, ज्यादा से ज्यांदा, बड़ी सी बड़ी संख्या मे उसको बांटने की आवश्यकता को हमें अच्छी तरह से समझना होगा। सांप्रदायिक ध्रुवीकरण ही इस सरकार को जिंदा रखे है, वही इसको जनता पर लगातार हमले करने का माहौल पैदा करता है। उससे बचना ही देश को बचाने का तरीका है। किसानों ने अपने अद्भुत आंदोलन के दौरान इस सबक को अच्छी तरह से सीखा और यही उनके इस आंदोलन की ताकत है, उसकी आधारशिला है।

हमे भी सीखना होगा और, दिन रात, दूसरों को सिखाना होगा।

सुभाशिणी अली

मौत का भयानक नृत्य

–मरियम ढवले

भारत ने आज़ादी के बाद से शायद ही कभी मौत का ऐसा भयानक नृत्य देखा होगा। कोविड की दूसरी लहर ने देश में हजारों लोगों को असमय मौत की नींद सुला दिया। असंख्य महिलायें और पुरूष ऑक्सीजन,वेंटिलेटर्स,दवाइयों और अस्पताल में बिस्तरों के अभाव में मौत के मुंह में चले

गयें। स्मशान और कब्रिस्तान में उनकी क्षमता से अधिक लाशें आती जा रही हैं। भारत में 25 अप्रेल 2021 को करीब 3.5 लाख कोविड पॉज़िटिव लोग थे। कोविड की वैश्विक बीमारी जब से दुनियां में फैली है तब से यह एक बेहद शर्मनाक आंकडा है। ये बेहद तकलीफदेह आंकडे आने वाले हफ्तों में और भी बढेंगे यह आशंका की जा रही है।

अब तक यह स्पष्ट हो चुका है कि इस भारी मानवीय त्रासदी के लिए मोदी–शाह के नेतृत्व वाली भाजपा–आरएसएस की केंद्र सरकार पूरी तरह से जिम्मेदार है । जनवरी और मार्च 2021 के बीच जब कोरोना मामले फिर से बढ़ रहे थे, प्रधानमंत्री और उनके स्वास्थ्य मंत्री राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय मंच पर घमंड भरी घोषणा कर रहे थे कि भारत ने कोविड के खतरे पर एक शानदार जीत हासिल कर ली है , और अब उस महामारी की पीछेहाट चालू हो गयी है। इस तरह से उच्च स्तर से आयी इस हवा हवाई घोषणा से पूरी सरकार और उसकी नौकरशाही ने सारी रोकटोक हटा ली। और नतीजा यह हुआ कि अभी तक टी एस ईलियट के शब्दों में '' अप्रेल सबसे क्रूर महिना है।''

भारत में पहली कोविड लहर के पूरे एक साल और चार माह बीत जाने के बाद भी देश में जीवन देने वाली ऑक्सीजन, वेंटिलेटर, दवाओं और अस्पताल के बिस्तरों की भारी कमी है यही एक पैमाना है जो बताता है कि भाजपा की केंद्र सरकार कितनी सरासर आपराधिक रूप से दोषी है । सरकार की वेक्सीन नीती के चलते यह समस्या और भी बढ गयी है। सरकार ने देश की सारी जनता को मुफ्त टीकाकरण करने की जिम्मेदारी से अपना हाथ खींच लिया है। पहले की सरकारों ने जनता को मुफ्त और सार्वभौमिक रूप से चेचक और पोलियो का टीका लगया था जिससे हमारे देश से ये भयानक बीमारियां खत्म हो गयी थीं। लेकिन यह सरकार अपने 2 लाख से अधिक नागरिकों की कोविड से मौत होने के बावजूद कारपोरेटों के भारी मुनाफों को बढाने में ज्यादा दिलचस्पी है।

कोविड महामारी को बडी संख्या में फैलाने और बढाने में कुंभ मेले ने बडा योगदान दिया है जिसमें लाखों लोग हरिद्वार में एकत्र हुये। इस मेले को करने की अनुमति केंद्र की भाजपा की सरकार और उत्तराखंड की इसीकी सरकार ने दी। कुंभ मेले में शामिल हुये हजारों लोग ऐसे हैं जो कोविड टेस्ट में पॉज़िटिव आये और ऐसे हजारों और भी हैं जिन्होने जांच नहीं करवाई लेकिन वे इस वायरस के केरियर बन कर पूरे देश में चले गये हैं। पिछले साल इसी केंद्र सरकार ने कुंभ मेले से कहीं छोटा एक तबलिगी सम्मेलन दिल्ली में आयोजित करने की अनुमति दे दी थी। लेकिन बाद में यही भाजपा, आर एस एस और उनकी आई टी सेल ने उस सम्मेलन के खिलाफ एक भयानक सांप्रदायिक अभियान छेड दिया था। अब ये लोग कुंभ को लेकर इतने चुप क्यों हैं? अब ये लोग मोदी शाह की बंगाल की बड़ी बड़ी रैलियों पर चुप क्यों हैं ? कोविड के संक्रमण की आशंका से केवल वामपंथ के द्वारा अपनी रैलियां रोक देने के बाद ही दूसरी राजनैतिक पार्टियों को अपनी रैलियां रोकनी पड़ीं। लेकिन यहां भी प्रधान मंत्री और गृह मंत्री ने अपनी रैलियों का कार्यक्रम सबसे बाद में स्थगित किया।

इस महामारी ने एक और बेहद कड़वी सचाई को सामने लाया। पूजीवाद मनुष्य को गिद्ध बना देता है ओर मृत शरीरों से भी मुनाफा बंटोरने की कोशिश करता है। ऑक्सीजन सिलेंडरों,

रेमडेसिविर इंजेक्शनों,दवाइयों और निजी अस्पतालों की भयानक लूट , वैक्सीन कारपोरेटों की उबकाई लाने वाली जबरन वसूली यह सब पूंजीवाद की अंर्तनिहित बुराइयों का दर्पण ही है।

इस महामारी के चलते बाल विवाह बढ गये हैं जिससे उनके बचपन का खात्मा हो गया है। इसने लाखों को लोगों को बंधुआ मजदूरी, हताशा और अभावों की ओर धकेल दिया है। सबसे अधिक इस महामारी ने सरकारी स्वास्थ्य सुविधाओं को मजबूत करने की जरूरत को पहले से कहीं अधिक रेखांकित किया है।

केरल की वामपंथ की सरकार ने इस गहरे अंधियारे में एक रोशनी की किरण दिखाई है। जब केंद्र और अधिकतर राज्य ऑक्सीजन की कमी से जूझ रहे थे उस वक्त केरल ऑक्सीजन के मामले मे ंन केवल आत्मनिर्भर है बल्कि पडोसी राज्यों तमिलनाडु, कर्नाटक, गोवा और लक्ष्यद्वीप को ऑक्सीजन दे भी रहा है। केरल ऐसा कैसे कर पाया ? केरल ने ऑक्सीजन के उत्पादन की क्षमता को अप्रेल 2020 की 50 लीटर प्रति मिनिट से बढा कर अप्रेल 2021 तक 1,250 लीटर प्रति मिनिट करने के लिये अपने सार्वजनिक क्षेत्र में पुर्ननिवेश किया ।

राज्य सरकार ने सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाओं को भी महत्व दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि कोविड मरीजो ंमें 95 प्रतिशत का इलाज सरकारी अस्पतालों में मुफत में किया गया। आज भी करीब 88 लाख परिवारों को मुफ्त में भोजन के पैकेट दिये जा रहे है जिससे कोई भूखा न रहे। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय ने खुद यह माना है कि दुसरे राज्यों से अलग केरल में 100ः प्रतिशत वैक्सीन का उपयोग हुआ है। और केंद्र सरकार के मुकाबले ,जो अपने मुफ्त वैक्सीन देने के वादे से पीछे हट गयी, केरल ने घोषणा कर दी है कि उनके राज्य में 18 साल से उपर के सभी लोगों को मुफ्त में कोरोना का टीका लगाया जायेगा।

हम सभी धर्म,जाति, समुदाय, भाषा,उम्र,लिंग के अंतर को भूल कर एक साथ आयें और इस अभूतपूर्व भयानक त्रासदी के लिये जिम्मेदारों को सामने लायें और उन्हे पराजित करें और उन वेकल्पिक क्रांतितिकारी नीतियों के लिये संघर्ष करें जो साहसपूर्ण घोषणा करती हों " एक दूसरी दुनियां संभव है!! एक दूसरा भारत संभव है !!

कोविड की यह नई लहर हमसे रोज किसी न किसी साथी को छीन रही है। झारखंड की जनवादी महिला समिति की राज्य कोषाध्यक्ष रेणू प्रकाश भी उन्हीमे से एक हैं। रेणू प्रकाश जनवादी महिला समिति की नेता होने के साथ साथ बेहतरीन कवियित्री भी थीं। इस बार के न्यूज लेटर में उन्हे विनम्र श्रृद्धांजलि देते हुये उनकी दो कवितायें हम यहां दे रहे हैं। – संपादक

रेणू प्रकाष की दो कवितायें

उसने भी चाही होगी

एक अच्छी सी जी जिन्दगी,

उसने भी चाही होगी

एक उड़ान।

जिन्दगी गई, उड़ान से पहले

मौत को भी दर्द हुआ होगा

उसे ले जाने से पहले।

...रेणु प्रकाश

यादें

नींद लाने की खातिर

मां से सुनी कई कहानियां

याद है,शब्दशः।

याद है अब भी।

एक कहानी के बाद

दूजे की फरमाइश।

कभी सीत –बसंत कभी

सात भाई एक बहन चंपा की कहानी।

सुनते – सुनते नींद में डूबना

याद है अब भी।

पर मां एक बात

तो बताना जरा,

आज भी जब नींद नही आती,

आपके किस्से याद करती हूं,

सोने की कोशिश करती हूं।

पर नींद तो जैसे दुश्मनी

 पाल लेती है।

आपके किस्से आपकी

जुबानी सुनने की जिद

ठान लेती है।

...रेणु प्रकाश

कोविड का हमला और उत्तर प्रदेश की चरमराती स्वास्थ्य सेवाएं

–मधुगर्ग

आज देश का सबसे बड़ा 20 करोड़ की आबादी वाला सूबा उत्तर प्रदेश हाँफ रहा है। एक–एक सांस के लिए मोहताज हो रहा है। आज (23 अप्रैल का) सरकारी आंकड़ों में 2 मार्च 2020 से अब तक (418 दिन) 10 लाख कोरोना के मामले और 10,733 मौतें दर्ज हैं और हर दिन यह आंकड़ा बढ़ रहा है किंतु सच तो यह है कि वास्तविक स्थिति इससे कई गुना भयावह है। प्रदेश में अफरा–तफरी मची है अस्पतालों में बेड नहीं, ऑक्सीजन, वेंटिलेटर, दवाइयां नहीं हैं और श्मशान में चिता जलाने के लिए टोकन बंट रहे हैं। अस्पतालों के बाहर मरीज बेड का इंतजार करते हुए ऑक्सीजन के अभाव में तड़प–तड़प कर जान दे रहे हैं। सोशल मीडिया पर मरीज के रिश्तेदार मदद की गुहार लगा रहे हैं। योगी सरकार प्रेस विज्ञप्ति में बड़े–बड़े वायदे कर रही है या फिर हमेशा की तरह फरमान जारी कर रही है जैसे कि एक फरमान आया कि किसी भी अस्पताल में कोविड मरीज की भर्ती बिना सी.एम.ओ. के आदेश के नहीं होगी। अब सी.एम.ओ. का फोन नहीं उठता, कंट्रोल रूम के तमाम फोन भी बंद है और उठ गया तो एक यान्त्रिक जवाब

मिलता है कि जब बेड खाली होगा तो सूचना दी जाएगी और सूचना कभी नहीं मिलती है। सच्चाई यह है कि रसूखदार लोगों या किसी तगड़ी सिफारिश वालों के रिश्तेदारों से अस्पताल भरे पड़े हैं। प्रदेश की राजधानी लखनऊ में हर दिन 6000 से 7000 केस (सरकारी आंकड़ा) बढ़ रहे हैं और सरकारी और प्राइवेट अस्पताल कुल मिलाकर 70 अस्पतालों में कोविड मरीजों का इलाज हो रहा है। प्राइवेट अस्पतालों का हाल यह है कि इन अस्पतालों में (एक अखबार में छपी जानकारी के अनुसार) 67 वेंटिलेटर हैं और 267 कुल ऑक्सीजन बेड हैं। आये दिन प्राइवेट अस्पतालों के बाहर नोटिस लग जाता है कि 2 या 3 घंटे की ऑक्सीजन बची है कृपया अपने मरीजों का कहीं अन्य इंतजाम कर लें। रोते–बिलखते परिजन और तड़पते मरीजों के दृश्य हर अस्पताल के बाहर देखे जा सकते हैं। यह केवल मध्यम वर्ग की कहानी है, इन सबके बीच गरीब बस्तियों में रहने वालों की खबरें बाहर ही नहीं आ पा रही हैं। एडवा ने अपनी लखनऊ की इकाइयों में जानकारी की तो भयानक स्थिति सामने आ रही है जैसे एक इलाके में 1 हफ्ते में 25 मौतें हो चुकी हैं।

अधिकांश घरों के लोग बुखार में तप रहे हैं। सरकारी आंकड़ों में यह मौतें दर्ज नहीं होंगी क्योंकि उनका कोविड टेस्ट नहीं हुआ या उन्हें यह सुविधा ही नहीं मिली और वे घर में ही रहकर मौत का शिकार हो गए। हर गरीब बस्ती में घर–घर में लोग बुखार, जुकाम, खांसी से पीड़ित हैं किंतु कहीं दवा नहीं बंट रही है। अस्पताल में जब मध्यमवर्ग धक्के खा रहे हैं तो गरीब आदमी तो वहां जाने की भी हिम्मत नहीं कर पाएगा। लखनऊ के एक केस से स्थिति की भयावहता को समझा जा सकता है। एडवा की एक जुझारू नेता माया के पति को 13 अप्रैल को सांस लेने में तकलीफ महसूस हुई और बुखार आया। एक स्थानीय डॉक्टर की दवाई से कुछ आराम मिला। 14 अप्रैल को स्थिति बिगड़ी किंतु किसी अस्पताल में भर्ती नहीं हो सकती थी क्योंकि कोविड का टेस्ट नहीं हुआ था और प्राइवेट डॉक्टर भी तभी देखेगा जब टेस्ट की रिपोर्ट नेगेटिव होगी।

किसी तरह कोविड का टेस्ट करवाया गया जिसकी रिपोर्ट 2 दिन बाद मिली जो कि नेगेटिव थी। इस बीच मरीज की स्थिति बिगड़ती गई क्योंकि इलाज बिना रिपोर्ट के नहीं शुरू हो सकता था। जब मरीज को सांस लेने में परेशानी होने लगी तो कर्जा लेकर 20,000 का सिलेंडर खरीदा गया जो 6 से 7 घंटे चलता था। बहुत मिन्नतों के बाद रिपोर्ट नेगेटिव आने पर प्राइवेट डॉक्टर ने देखा और सी.टी. स्कैन के लिए कहा रिपोर्ट में फेफड़ों में जर्बदस्त संक्रमण था किंतु आर.टी. पी.सी.आर. रिपोर्ट नेगेटिव है तो अस्पताल भर्ती नहीं लेंगे यद्यपि उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री का बयान आ चुका था कि ऐसे मरीजों की भर्ती विशेष वार्ड में होगी किंतु यह केवल बस कागजों पर पब्लिसिटी के लिए था हकीकत इससे कहीं अलग थी। अब घर पर ही ऑक्सीजन लगी थी और स्थानीय डॉक्टर की दवाइयां चल रही थीं। ऑक्सीजन सिलेंडर खाली होने पर उसे रिफिल करवाने लखनऊ से दूर बाराबंकी बॉर्डर पर जाना पड़ता था क्योंकि कहीं ओर रिफिल होना असंभव था। रिफिल करवाने के लिए इतनी लंबी लाइन कि 6 से 7 घंटे लग जाते और इस बीच मरीज की स्थिति बिगड़ती जाती। अंत में 20 अप्रैल की रात मरीज ऑक्सीजन की कमी से तड़पता रहा और परिवार के लोग रात भर अस्पतालों के चक्कर लगाते रहे पर निराशा ही हाथ लगी। 21 अप्रैल की सुबह मरीज ने आखिरी सांस ली। यह एक कहानी है जो उ.प्र. में मरीजों की स्थिति स्पष्ट करती है और इससे भी ज्यादा भयानक कहानियां हर दिन घटित हो रही हैं।

ऑक्सीजन सिलेंडर जो सामान्य दिनों में 5000 रू0 का मिलता था वह 20,000 से लेकर 30,000 या कभी–कभी 40,000 रूपये तक का बिका है और वह भी मिलना मुश्किल है। रेमेडिसिवियर दवा जो कोविड मरीजों को दी जाती है वह बाजार से गायब है, कालाबाजारी में कई हजार में मिल रही है। फेविफ्लू भी दुकानों से गायब है, अस्पतालों में मिलने का प्रश्न ही नहीं है वैसे योगी जी के बयान आ रहे हैं कि न तो ऑक्सीजन की कमी है और रेमेडिसिवियर का भी पर्याप्त स्टॉक है। मेडिकल चिकित्सा के मंत्री सुरेश खन्ना का बयान आता है कि उत्तर प्रदेश में एक भी मरीज की मौत ऑक्सीजन की कमी से नहीं हो रही है। झूठ बोलने में योगी व उनके मंत्रियों को महारथ हासिल है। प्राइवेट एंबुलेंस 20,000 से 50,000 तक वसूल रही हैं। मरीज के परिवार वाले जमीन–जायदाद बेचकर भी पैसे का इंतजाम कर रहे हैं किंतु फिर भी मरीज को नहीं बचा पा रहे है।

अब दो दिन पहले योगी जी का एक नया फरमान आ गया कि ऑक्सीजन सिलेंडर केवल अस्पतालों को मिलेगा, निजी लोगों को नहीं दिया जाएगा। मतलब साफ है कि अस्पतालों में भर्ती नहीं और यदि कोई घर रहकर इलाज करवाना चाहे तो नहीं करवा सकता। योगी जी निजी तौर पर ऑक्सीजन ले जाने वालों पर रासुका लगाने तक की धमकी दे रहे हैं। यद्यपि बहुत दबाव के बाद अस्पतालों में भर्ती करवाने के लिए सी.एम.ओ. के पत्र की अनिवार्यता वापस ले ली गई है किंतु अस्पतालों में बेड ही नहीं है। दरअसल योगी जी अपनी टीम इलेवन (11) के चश्मे से पूरी स्थिति को देखते हैं जो जनता की जमीनी हकीकत से बहुत दूर है जिसे मुख्यमंत्री देखना नहीं चाहते। सरकार द्वारा जारी प्रेस विज्ञप्ति में बस दावे हैं किंतु जमीन पर कुछ भी नहीं है।

सरकार कोविड के आँकड़े तो छुपा ही रही है साथ ही और मौत के आँकड़ों पर भी पर्दा डाल रही है उदाहरण के लिए 22 अप्रैल को सरकारी आँकड़ों के अनुसार लखनऊ में कोविड से 21

मौतें हुईं जबकि सच्चाई यह है कि भैसाकुंड श्मशान घाट में रात आठ बजे तक 102 लाशें कोविड की जलाई जा चुकीं थी और ऐसे चार श्मशान घाटों और चार कब्रिस्तानों में लाये गये शवों की संख्या इसमें नहीं जुड़ी है। श्मशान घाटों का दृश्य कितना भयावह है कि सड़कों तक में चितायें जल रहीं हैं लकड़ी समाप्त हो रही है। शवों को लेकर परिजन घंटों इंतजार करते हैं। अब योगी जी का एक और फरमान है कि कोरोना की भयावह स्थिति जो दिखाएगा, या बताएगा या लिखेगा तो उसके खिलाफ भी मुकदमा दर्ज होगा।

उत्तर प्रदेश की राजधानी की स्थिति इतनी भयानक है तो छोटे–छोटे शहरों की अव्यवस्था की कल्पना की जा सकती है। योगी जी के संसदीय क्षेत्र गोरखपुर में जहां कुछ साल पहले ऑक्सीजन की कमी से 48 मासूम बच्चों की जान चली गई थी और उन्हें बचाने की कोशिश करने वाले डॉक्टर कफील खान आज तक सजा भुगत रहे हैं, वहाँ अभी भी हालात नहीं बदले हैं। गोरखपुर के बड़हलगंज दुर्गावती कोविड अस्पताल में 2 दिन पहले नोटिस चस्पा की गई कि ऑक्सीजन की कमी के कारण अस्पताल मरीजों का इलाज करने में असमर्थ है और फिर कई घंटे में ऑक्सीजन का वाहन पहुंच पाया क्योंकि रास्ता बहुत खराब है, ऑक्सीजन की कमी से 5 मरीजों की मौत 2 दिनों में हो चुकी है। गोरखपुर में 23 दिन में 11,953 कोरोना केस व 42 लोगों की मौत हुई है (सरकारी आँकड़ा)। प्रधानमंत्री के संसदीय क्षेत्र बनारस के बी.एच.यू. मेडिकल कॉलेज के बाहर एक मां की अपने जवान बेटे की लाश रिक्शा पर लेकर भटकने की फोटो वायरल हो चुकी है जो स्थिति की भयावहता बताने के लिए काफी है। अयोध्या जो योगी जी का सबसे प्रिय स्थान है वहां भी अब ऑक्सीजन, दवाइयों व बेड की कमी से जनता में अफरा–तफरी मची है। इटावा जो पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव का संसदीय क्षेत्र था वहां के सैफई आयुर्विज्ञान संस्थान में ऑक्सीजन की कमी हो गई है। इटावा के जिला अस्पताल में 2 दिन पहले ऑक्सीजन की कमी से 5 मौतें हो गई। किसान सभा के नेता कामरेड शिवनारायण शर्मा भी ऑक्सीजन की कमी का शिकार हो गये। कानपुर, आगरा, इलाहाबाद अन्य सभी शहरों में अफरा–तफरी मची है।

मुख्य सवाल यह है कि सरकार जिसकी मुख्य जवाबदेही बनती है उसने इस आपदा के लिए क्या तैयारी की थी। वास्तविकता यह है कि पिछले साल कोरोना की भयानक मार के बाद भी योगी सरकार ने इस आपदा से निपटने की कोई तैयारी नहीं की जबकि डब्ल्यू.एच.ओ. (ण्भ्ण्व्) तथा वैज्ञानिकों द्वारा सेकंड वेव आने की संभावना व्यक्त की गई थी किंतु योगी जी इस बीच तथाकथित 'लव जिहाद' से निपट रहे थे, अयोध्या में करोड़ों की मूर्ति लगवा रहे थे व दीपोत्सव करवा रहे थे, 'राम मंदिर' व अयोध्या के सुंदरीकरण पर करोड़ों का बजट बन रहा था, बंगाल में रैलियां कर जहर उगल रहे थे। जनस्वास्थ्य, अस्पताल, ऑक्सीजन प्लांट उनके एजेंडे पर कभी नहीं रहा। कितनी हैरानी की बात है कि संभावित खतरे को जानते हुए भी नए अस्पताल नहीं बने। गैर जिम्मेदाराना बयान दिए जा रहे हैं जैसे लखनऊ के सांसद राजनाथ सिंह का बयान है कि कोरोना से लड़ने के लिए रामचरितमानस का पाठ लाभकारी होता है।

इस अफरातफरी के बीच दो ऑक्सीजन टैंकर मंगवाकर सरकार अपनी पीठ थपथपा रही है जो तैयारीएक साल में होनी चाहिये थी वह इस कोहराम की स्थिति में करने की घोषणायें भर हो रही हैं। दरअसल कोरोना से होने वाली हजारों मौतें उस खरतनाक वायरस से नहीं बल्कि खतरनाक रूप से चरमराई हुयी स्वास्थ्य सुविधाओं के कारण हो रही हैं। यह व्यवस्था के हाथें हो रहीं सामूहिक हत्यायें हैं।

एलिजाबेथ आर्मस्ट्रांग की पुस्तक की समीक्षा

– सुभाशिणी अली सहगल

आइडवा के बहुत सारे नेता और कार्यकर्ता का एलीज़ाबेथ आर्मस्ट्रांग को जानते हैं यह उनसे मिले हैं। वह कई बार भारत आ चुकी हैं और जब भी वह आती हैं वह आइडवा के कार्यक्रमों मे बड़ी दिलचस्पी लेती हैं, हमारे दफ्तर जाती हैं, हमारे कार्यकर्ताओं से बातचीत करती हैं। उन्होने आइडवा के काम और इतिहास पर एक पुस्तक लिखी है। इसको कई साल पहले तूलिका प्रकाशन ने छापा। बड़ी खुशी की बात है की उसे अब, नए सिरे से, लेफ्ट वर्ड ने छापा है। पुस्तक का नाम है – 'आल इंडिया डेमोक्राइतिक विमेन्स असोशिएशन और उसके प्रतिरोधी संघर्ष: जेंडर और नव-उदारवाद'। हमारे संगठन मे काम करने वालों के लिए ही नहीं, बल्कि महिला आंदोलन से जुड़े तमामा लोगों के लिए और, उनके अतिरिक्त, जनवादी आंदोलन के कार्यकर्ताओं और फिर तरह-तरह के विशेषज्ञों के लिए यह बहुत महत्वपूर्ण किताब है।

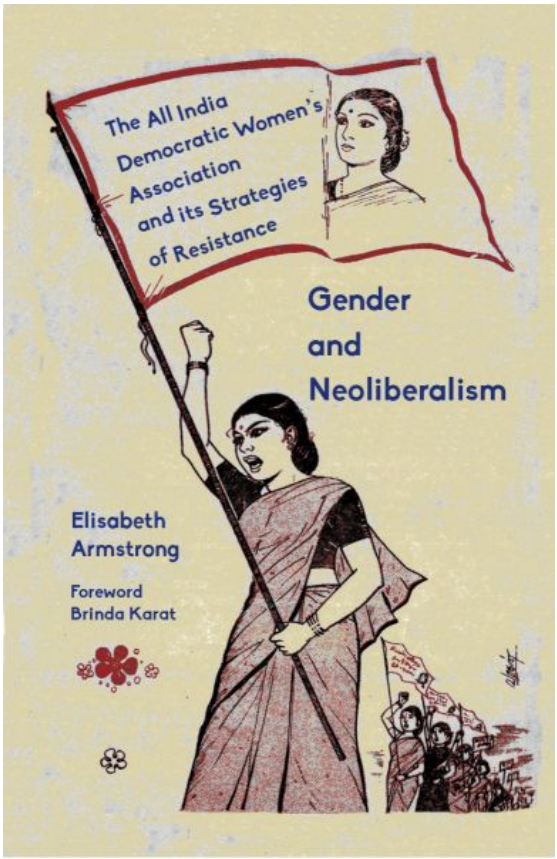

किताब अंग्रेज़ी मे है और हिन्दी मे छपने मे समय लग सकता है इसलिए धारावाहिक के रूप मै उस पर आधारित कुछ अंश इस हिन्दी न्यूज़लेटेर और (अगर आप चाहे) इसके बाद के अंकों मे मैं छपवाने का काम करूंगी। नए सदस्यों को संगठन के बारे मे बहुत सी जानकारी मिलेगी और पुराने सदस्यों और कार्यकर्ताओं को भी नए तरीके से अपने कामों के बारे मे सोचने का मौका मिलेगा।

पुस्तक की भूमिका ब्रिन्दा कारत ने लिखी है। वह आइडवा की स्थापना के समय से संगठन के साथ जुड़ी हैं और 1993 से 2002 तक उसकी महा मंत्री थी। इस भूमिका मे उन्होने लिखा है "यह किताब भारत की उन नए रास्तों को दिखाने वाली महिलाओं की सकारात्मक विरासत को आगे ले बढ़ाती है जिन्होने शैक्षणिक शोध (अकादेमिक्स) को जीवंत महिलाओं के जीवन, मुद्दों और संघर्षों के साथ जोड़ने का काम किया न की सत्ताधारियों के हितो के अनुरूप तयार किए गए विषयों के साथ।

....एलीज़ाबेथ आर्मस्ट्रांग ने, उस समय के महिला आंदोलनो पर लिखने वाले अन्य लोगों के विपरीत, इस बात का अध्ययन किया है की नव-उदारवादी नीतियों का महिलाओं के विभिन्न हिस्सों पर किस तरह का प्रभाव डाला है। दलितों पर, भूमिहीनों पर, शहरी मजदूर बस्तियों मे रहने वाली महिलाओं पर। और फिर महिला संगठन ने इनके खिलाफ लड़ने की किस तरह की रणनीतिया अपनाईं ।"

आइडवा के इतिहास की जड़े साम्राज्यवाद-विरोधी और औपनिवेशवाद-विरोधी आंदोलन, ज़मीन और बंटाईदारों के अधिकारों के आंदोलन और जातिवाद-विरोधी समूहों मे पाये जाते हैं। इसके साथ, समाज सुधार आंदोलन मे महिलाओं की भागीदारी की मांग मे भी इसकी शुरुआत देखी जा सकती है। यह जड़ें बीसवी शताब्दी की शुरुआत मे विकसित हुई जब विभिन्न इलाकों, राज्यों और क्षेत्रों मे आर्थिक, राजनैतिक और व्यक्तिगत अधिकारों और स्वतन्त्रता के संघर्षों के साथ महिलाओं के समूह निकल आए। पापा उमानाथ आइडवा के संस्थापकों मे से एक थी जिनकी शुरुआत बीसवी सदी के भारत के इस विस्फोटक संगठन के कार्य मे हुई। वह दक्षिण भारत की तामिल नाडु की थीं। पापा संगठन की कई सालों तक राष्ट्रीय नेता रही। उनकी द्दिष्टि मे आइडवा की क्षेत्रीय विशेषता के साथ राष्ट्रीय पहलू जुड़ा था। आइडवा के अलग समय और अलग क्षेत्रों मे उभरने वाले तमाम एक दूसरे के साथ जुडने वाले आंदोलन और संघर्षो की तुलना पापा एक पीपल के पेड़ की उन जड़ों से करती थी जो अलग-अलग दिशाओं से आकर एक दूसरे से लिपट जाती हैं। "आइडवा उस पीपल के पेड़ की तरह है जिसकी जड़ें पेड़ के बढ़ने के साथ फैल जाती हैं और तमाम पेड़ निकल आते हैं जो एक दूसरे के साथ जुड़े हुए हैं। हमने एक राष्ट्रिय महिला संगठन स्थापित किया जो उत्पीड़न और अन्याय का सामना करने वाली महिलाओं के बहुमत की लड़ाई लड़ सकता था।'

आइडवा की शुरुआत को लेकर पापा की कहानी उन तमाम आंदोलनो का वर्णन है जिन्होने उनके अपने सबसे पुराने अनुभवों को जन्म दिया। ... उनका जन्म 1931 मे हुआ था। बचपन मे ही उनके पिता की मृत्यु हो गयी और उनका परिवार बिलकुल कंगाल हो गया। अपनी माँ, लक्ष्मी, और दो भाई-बहन के साथ वह पोनमलय अपने मामा के पास रेलवे कालोनी मे रहने चली आयी।

पापा की मा ने, बच्चों की मदद लेकर, रेल मजदूरों के लिए एक इडली की रेडी लगाई और उसी से अपने परिवार का पालन-पोषण किया। चूंकि वह अपनी रेडी जगह-जगह लगाती थी, इसलिए वह आज़ादी के आंदोलन से जुड़े लोगों का पैगाम भी इधर से उधर पहुँचाने लगी।

पापा ने अपनी माँ के बारे मे इस तरह लिखा: "मेरी माँ साक्षर नहीं थी लेकिन उन्होने मुझे सामयिक राजनैतिक परिस्थितियो के प्रति संवेदनशील होना सिखाया। जब पार्टी भूमिगत थी, वे पार्टी के पत्रों की रखवाली करती थी। इन पत्रों को वे अपने बाल मे छुपाती और ऊपर एक टोकरी रख लेती थी। वे उन पत्रों को पढ़ भी नहीं सकती थी। उनका काम था उन्हे साथियों के पास पहुंचाना और ब्रिटिश हुकूमत से यह सब छिपा कर रखना। मैं अपनी माँ पर गर्व करती हूँ...."

लक्ष्मी की यह राजनैतिक सोच रेल मजदूरों के संघर्षों के बीच परिपक्व हुई थी। पापा ने इन संघर्षो मे सबसे प्रभावशाली संघर्ष, मई 1946 मे शुरू होने वाली हड़ताल, के बारे मे बयान किया है: मजदूरों ने पहले एक दिन की हड़ताल उन कार्यकर्ताओं की बहाली के लिए की जिन्हे यूनियन का संगठन करने की वजह से नौकरी से निकाल दिया गया था। ऐसा करने पर उनका बहुत उत्पीड़न किया गया और उनकी तनख्वा भी काटी गयी। जुलाई तक 5000 मजदूर हड़ताल पर उतार चुके थे। रोज़ होने वाली सभाओं मे 12000 तक लोग इकठ्ठा हो जाते थे। हड़ताल के लिए व्यापक समर्थन बढ़ता जा रहा था। इस बीच, बहुत ही बदनाम मलाबार स्पेशल पुलिस को हमला करने के लिए तैनात कर दिया गाय। 5 सितंबर को मजदूरों पर गोली चली और दो लोग मर गए, अन्य घायल हुए। फिर पुलिस कालोनी के अंदर घुसी। मजदूरों, महिलाओं और बच्चो पर बर्बरता पूर्वक हमले हुए। 4 अन्य मजदूर मर गए।

वर्गीय अत्याचार की सबक के साथ, पापा पुरुष प्रधान नियंत्रण के बारे मे भी बहुत जल्दी सचेत हुई। उन्होने लिखा: "मैं बहुत छोटी थी। कालोनी के तमाम लोग हमारे पोनमलय महिला असोशिएशन के सदस्य थे। लक्ष्मी ने वैवाहिक मुद्दों और महिलाओं पर होने वाली हिंसा के सवालों को भी उठाया। मैं पुरुष-अहंकार (शोविनिज़्म) से बहुत घ्रणा करती हूँ। छुटपन से मै सवाल करती आई हूँ – महिलाओं को हीन क्यों समझा जाता है। उस आक्रोश के साथ ही हम महिलाओं का संगठन बना सकते है। महिलाओं की पिटाई के खिलाफ महिलाओं को अपनी आवाज़ क्यों नहीं उठानी चाहिए? तमाम औरते इसके खिलाफ हैं। मेरी माँ ने अपने समय मे मुझे इस हिंसा के खिलाफ लड़ना सिखाया था।"

1943 से ही पापा बाल संघम की सदस्य बन चुकी थी (इसको भी कम्युनिस्ट पार्टी चलाती थी) और उन्होने भी स्वाधीनता आंदोलन मे शामिल होकर गिरफ्तारी दी। न्यायाधीश के सामने पेश होकर उन्होने बड़ी बहादुरी के साथ कहा कि उनका मकसद अंग्रेज़ो की पूरी व्यवस्था को समाप्त करना। लेकिन उनको उम्र के कारण जेल नहीं भेजा गया और, अपनी माँ की गोद मे सर रखकर, वह खूब रोईं!

’40 और 50’ के दशकों के बड़े हिस्से मे कम्युनिस्ट पार्टी भूमिगत होकर काम कर रही थी और पापा और उनकी माँ ने इन दिनो मे सक्रिय भूमिका निभाई। 1945 मे, 14 साल की उम्र मे, पापा ने पार्टी की सदस्यता ग्रहण कर ली। 1950 मे उनको और उनकी माँ को गिरफ्तार कर लिया गया। दोनों को बहुत मारा गया लेकिन उन्होने अपने साथियों के बारे मे कोई जानकारी नहीं दी। जेल मे ‘राजनैतिक कैदी’ का दर्जा हासिल करने के लिए, दोनों ने भूख हड़ताल की। इसके दौरान, लक्ष्मी बहुत कमजोर हो गईं और भूख हड़ताल के 23वे दिन, उनकी मौत हो गयी। उस समय पापा एक अलग कोठरी मे थी और उन्हे अपनी माँ को देखने भी नहीं दिया गया। जेलर ने आकर उनसे कहा कि अगर वह अपनी माँ को देखना चाहती हैं तो उन्हे पार्टी से इस्तीफे देना होगा। पापा ने इंकार किया और अपनी माँ की लाश को कोठरी के सीकचो के बीच से ही देख पायी।

जेल से निकलने के बाद, पापा ने पूरे प्रदेश मे महिला समिति की स्थापना जांनकी अम्माल जी के साथ की। जानकी अम्माल एक बिलकुल निराली शख्स थी जो बहुत ही कम उम्र मे एक ड्रामा कंपनी की सदस्य बन गयी थी। उस जमाने मे महिलाओं का किरदार पुरुष कलाकार निभाते थे। जानकी अम्माल अकेली ऐसी थी जो पुरुषों का किरदार निभाती थी! वह राष्ट्रीय आंदोलन की बड़ी नेता के रूप मे मानी जाने लगी और मदुराय की कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी की महामंत्री बन गयी – जो कि उस जमाने मे बिलकुल ही अनोखी बात थी। इसके बाद वह कम्युनिस्ट पार्टी की सदस्य बनी और अंग्रेज़ सरकार ने उन्हे मदुराय से ज़िला बदर करके, उसी रेलवे कालोनी मे रहने को मजबूर किया जहां पापा रहती थी – पनमलाय की गोल्डन राक रेलवे कालोनी। दोनों ने साथ काम करना शुरू किया। नाटको और गीतों के माध्यम से उन्होने काफी महिलाओं और लड़कियो को अपने साथ जोड़ा। बंगाल मे अकाल, मजदूरों की समस्याएँ, खेत मजदूर औरतों की विपदा और तमाम अन्य मुद्दों को उठाते हुए उन्होने एक मजबूत महिला संगठन खड़ा किया। याद करने की बात है कि उन्होने हमेशा लैंगिक और आर्थिक (वर्गीय) प्रश्नो को एक साथ जोड़कर संगठन का काम किया। पापा अपने संगठन बनाने के तरीको के बारे मे एक दिलचस्प बात बताती है: ‘गोल्डन राक कालोनी मे रेल यूनियन के 5000 सदस्य थे। जानकी अम्माल के साथ मै उन 5000 सदस्यों के घर गईं और उनकी पत्नियों और घर की महिलाओं को महिला संगठन का सदस्य बनाया। हमने फिर इसी तरह का काम ईरोद, पोथानूर, चेन्नई और तमिल नाडु के अन्य स्थानो मे दोहराया।‘

यह काम केवल ट्रेड यूनियन के अभियानो और आंदोलनो को बल देने तक सीमित नहीं रहा। ट्रेड यूनियन से उपजे इन महिलाओं की कमेटियाँ बाहर की तरफ फैली और इलाके और ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं को भी संगठित करने के काम मे लग गयी। हर क्षेत्र मे उन्होने महिलाओं के लिए समान वेतन की मांग को उठाया।

1950 के दशक मे इन प्रयासों के परिणामस्वरूप, मदुराय के समीप एक गाँव, थुवरिमान मे भूमिहीन महिला मजदूरों का एक बड़ा संघर्ष हुआ। इसकी तयारी मे जानकी अम्माल ने जाकर खुद खेतों मे काम किया एक महीने के बाद, महिला मजदूरों ने बेहतर दहाड़ी और काम की परिस्थितियों के लिए हड़ताल कर दी।

जमींदारों ने महिलाओं को वहाँ से अपने घरों को खाली करने का आदेश दिया। महिलाएं नहीं मानी और उन्होने ज़मीन को जोत डाला। फिर जमींदारों ने बाहर से मजदूरों को लाने की धमकी दी। महिलाओने ने जवाब दिया की वे उनके हाथ-पैर तोड़ डालेंगे। इसका नतीजा हुआ कि बाहर से लाये गए मजदूर गाँव छोडकर भाग गए। इसके बाद जमींदारों को महिलाओं की मांगे माननी पड़ी। पापा ने जब इस घटना का बयान किया तो उन्होने एक बात पर ज़ोर दिया। उन्होने कहा कि हिंसा के खतरे के दौरान जानकी अम्माल खुद महिलाओं के बीच खड़ी रहीं, उनके साथ रहीं, उनके साथ उन्होने मुक़ाबला किया। यह नहीं हुआ कि हिंसा हो गयी और उसके बाद महिला नेता उसकी जांच करने पहुंचे। जानकी अम्माल की उपस्थिती हिंसा का न होने का एक कारण था। उनकी बहादुरी का एक पक्ष यह भी है कि दलितों का साथ देने वाले गैर-दलितों को बहुत कुछ बर्दाश्त करना पड़ता था सो उन्होने वह सब भी बर्दाश्त किया।

(इस संघर्ष के बाद, तंजावुर के इलाके मे भी ज़बरदस्त संघर्ष हुए। कीलवेनमनी का गाँव तंजावूर मे ही है और वह इन संघर्षों का केंद्र था। यहाँ सीपीआई के नेत्रत्व की बड़ी भूमिका थी और महिलाओं की बहादुरी अद्भभूत। 1968 के 25 दिसंबर को यहाँ संघर्षरत मजदूरों पर जमींदारों का बड़ा हमला हुआ और 42 लोगों को, जिनमे छोटे बच्चे भी थे, एक झोपड़ी मे आग लगाकर ज़िंदा जला दिया गया। इस घटना का असर दूर तक गया और सरकार को मजबूर करके तमाम कानून बनाए गए जिनका फायदा खेत मजदूरों को मिला लेकिन यह भी याद करने की बात है की 42 दलितों के हत्यारों को न्यायालय ने बरी कर दिया। जातिवाद से प्रेरित उनका यह फैसला कभी भूला नही जा सकता है।)

तामिल नाडु के महिला आंदोलन की यह विशेषता थी की उसमे वर्ग और लिंग, दोनों को महत्व दिया गया और इस आंदोलन के नेताओं ने केवल तामिल नाडु मे गठित महिला संगम मे ही नहीं बल्कि 1981 मे स्थापित आइडवा मे भी इस समझ को संगठन की समझ बनाने मे बड़ी भूमिका अदा की।

तामिल नाडु मे जनवादी महिला समिति का गठन 1973 मे हुआ और उसका पहला सम्मेलन 1974 मे। संगठन का नारा था 'महिला मुक्ति, समानता, समाजवाद'।

तामिल नाडु मे महिला संगठन मे अपनी सक्रियता के साथ, पापा शुरू से आइडवा की स्थापना की तयारियों मे शामिल और सक्रिय थी। वह बताती हैं की इस नए संगठन के चरित्र को लेकर काफी बहस हुई। एक तरफ यह राय थी कि इसे सीपीआई(एम) का एक विभाग होना चाहि। दूसरी ओर, समझ यह थी कि इसे तमाम महिलाओं का आम संगठन होना चाहिए। पापा कहती हैं – 'हमने तय किया की हम संगठन को जनवादी तरीके से चलाएँगे, एक जन संगठन के रूप मे। हम सीपीआईएम के पिच्छलग्गू नहीं हैं, हम महिलाओं के लिए, महिलाओं के और महिलाओं द्वारा संचालित संगठन हैं।

यहाँ इस बात को याद करने की ज़रूरत है (और इसका लंबा विवरण पुस्तक मे है) की सीपीआईएम के उस समय के महामंत्री, का ई एम एस नंबूद्रीपाद ने आइडवा की स्थापना और उसके नियम, उद्देश्य और

द्दिष्टिकोण तह करने मे बहुत रुचि ली और महत्वपूर्ण सुझाव भी दिये। महिलाओं का तीन-स्तरीय शोषण की बात पर उन्होने ही ज़ोर दिया। महिला के रुप मे महिला, मजदूर के रूप मे महिला और नागरिक के रूप मे महिला – तीनों मे वह शोषण की शिकार है और उसकी मुक्ति की लड़ाइ को उसके शोषण की तीनों पहलुओं को मद्देनजर रखना होगा। यह समझ आइडवा की आधारशिला बनी जो आज तक संगठन की मजबूती का कारण है।

पापा और जानकी अम्माल के संगठनात्मक और विचारधारात्मक खूबियों और उनके द्वारा स्थापित तमिल नाडु जनवादी महिला समिति की ताकत के फलस्वरूप आइडवा का पहला, स्थापना सम्मेलन मार्च, 1981 मे चेन्नई मे सम्पन्न हुआ। इस सम्मेलन मे 16 राज्यों के 11 लाख सदस्यों के 300 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। सम्मेलन का उद्घाटन श्रीमती वीना मजूमदार ने किया। (वे भारत सरकार द्वारा 1974 मे नामित महिलाओं के स्तर को लेकर रिपोर्ट तयार करने वाली कमेटी की मंत्री थी। समिति की अति प्रभावशाली रिपोर्ट 'समानता की ओर' प्रकाशित करने के बाद, उन्होने श्रीमती लतिका सरकार के साथ CWDS – महिला अध्ययन केंद्र- की स्थापना की। इस केंद्र ने महिला अध्ययन और महिला आंदोलन के बीच संबंधो को लगातार मजबूत करने का प्रयास किया। वीना जी आजीवन आइडवा की प्रेरणास्त्रोत और बहुत बढ़िया सहयोगी रहीं)। अपने सम्बोधन मे उन्होने परिवार के अंदर और परिवार के बाहर महिलाओं के शोषण पर ज़ोर दिया और यह आशा जताई की इस उत्पीड़न का सामूहिक एहसास महिलाओं मे एक आम जागृति और चेतना पैदा करेगा। उन्होने यह भी कहा कि महिला आंदोलन को तमाम जनवादी आंदोलनो का हिस्सा बनना चाहिए और याद दिलाया कि महिलाओं की समानता की मांग वर्गीय आंदोलन मे फूट न डालकर दरअसल मुक्ति के लिए क्रांतिकारी आंदोलन को मजबूत करती है।

पापा इस सम्मेलन मे संगठन की राष्ट्रीय उपाध्यक्षा चुनी गयी और उन्होने जीवन भर – तमाम शारीरिक कठिनाईयों के बावजूद – संगठन को मजबूत करने मे ज़बरदस्त योगदान दिया। चाहे व्हीलचाइर मे, चाहे छड़ी का सहारा लेकर, वे हर बैठक मे उपस्थित रहती थी, अंग्रेज़ी मे हो रही चर्चा का लगातार अनुवाद करवाती थी, और हर मुद्दे पर अपनी बहुत स्पष्ट राय रखती थी।

उनके आखरी दिनों मे पापा से पूछा गया था कि महिलाओं को संगठन मे कैसे लाया जाता है और उन्होने उत्तर दिया कि संगठन मे आने से पहले, महिलाओं को 'अच्छी महिला' की परिभाषा को चुनौती देनी पड़ती है क्योंकि उसका बहुत छोटा सा कदम भी इस परिभाषा के खिलाफ होता है। उन्होने कहा 'जब हमने काम करना शुरू किया तो महिलाओं का घर से निकलना अपराध समझा जाता था लेकिन हमारे संगठन के विकास के साथ, महिलाएं खुद उन मुद्दों को लेकर आई जिनसे वह पहले परहेज करती थी। उन्होने संघर्षों के लिए नए सुझाव भी रखे...'

पापा की मृत्यु 2010 मे हुई। आखरी दम तक वह सक्रिय रही। उन्हे गोल्डन राक रेलवे कालोनी मे उन 6 मजदूरों के बगल मे दफनाया गया जिनकी शहादत की वह 14 साल की उम्र मे साक्षी थी और जिनके संघर्ष मे वह शामिल हो चुकी थी।

अपनी मौत से पहले, पापा ने आइडवा के 25 वर्ष पूरे होने पर आयोजित तमाम कार्यक्रमों मे भाग लिया था। वे दिल्ली भी राष्ट्रीय कार्यक्रम मे भाग लेने आई थी। आयोजन के दौरान, मंच के टूटने से, वे गिर पड़ी और उनकी पसलिया टूट गयी। फिर भी उन्होने हिम्मत नहीं हारी और वे काम करती रही। इस वक्त तक आइडवा की सदस्यता 1 करोड़ के करीब पहुँच चुकी थी। जिस पीपल के पेड़ को बोने, सीचने और बड़ा करने मे उन्होने इतनी मेहनत की थी, वह वास्तव मे देश भर मे फैल रहा था; उसकी जड़े काफी ऊंची हो गयी थी लेकिन वह एक दूसरे के साथ लिपटी थी, एक दूसरे को मजबूत कर रहीं थी, और करती रहीं।

नेटफ्लिक्स पर प्रदर्षित फिल्म "पगलैट" – खोखले रीति–रिवाजों के पाखंडों को उधेड़ती एवं खुद के वजूद को तलाशती एक औरत की कहानी

– मधु गर्ग

नेटफ्लिक्स पर लखनऊ की पृष्ठभूमि में बनी उमेश बिष्ट द्वारा निर्देशित "पगलैट" फिल्म एक उच्च वर्णीय संयुक्त हिंदुस्तानी परिवार को खोखले रीति–रिवाजों व स्वार्थी रिश्तों की परत दर परत खोलती व उनके बीच कसमसाती एक युवा विधवा की कहानी है। फिल्म में संध्या के रूप में मध्यमवर्गीय परिवारों की पढ़ी–लिखी लड़कियों का वह चरित्र सामने आता है जो माता पिता

की इच्छानुसार शादी कर परिवार निभाने में अपनी सारी योग्यताओं का दफन तो कर देती है किन्तु उनकी आकांक्षायें कसमसाती रहती हैं। संध्या (सान्या मेहरोत्रा) जिसका विवाह 5 महीने पूर्व घरवालों की मर्जी से अच्छे "कमाते–खाते" लड़के आस्तिक से हुआ था किंतु दोनों के बीच किसी प्रकार का लगाव नहीं पनप पाया था कि लड़के की आकस्मिक मौत हो जाती है। शोक व्यक्त करने के लिए रिश्तेदारों का आना शुरू हो जाता है किंतु संध्या पति की मृत्यु का दुःख महसूस ही नहीं कर पा रही हैं जिसे आने वाले रिश्तेदार एक सदमा समझते हैं किंतु संध्या अपने दिल की बात अपनी दोस्त नाजिया से कहती है कि उसे दुःख ही नहीं हो रहा है और भूख भी दबाकर लग रही है। वह पेप्सी पीना चाहती है और मसाले की चिप्स भी खाना चाहती है। दूसरी ओर शोक व्यक्त करने आए रिश्तेदार दिखावे के लिए तो रोते हैं किंतु रात के अंधेरे में छत पर शराब पीते हैं। कहानी में एक मोड़ तब आता है जब संध्या आस्तिक की अलमारी से कुछ जरूरी पेपर निकालती है तो उसमें से एक लड़की की फोटो मिलती है जिसके पीछे आस्तिक ने 'जानू' लिखा था जो संध्या के लिए बहुत बड़ा धक्का था। जब शोक व्यक्त करने ऑफिस के लोग आते हैं तो वह लड़की भी घर आती है जिसे संध्या अपने कमरे में बुलाकर उसके व आस्तिक के संबंधों के बारे में जानना चाहती है। यह लड़की आकांक्षा (सानिया गुप्ता) थी जो आस्तिक के साथ ऑफिस में काम करती थी और दोनों में प्यार था किंतु आकांक्षा के परिवार वाले आस्तिक के साथ शादी के खिलाफ थे इसलिए शादी नहीं हो सकी थी। इसके साथ ही संध्या डॉक्टर को दिखाने के बहाने आकांक्षा से मिलती है और उससे वह आस्तिक की पसंद नापसंद के बारे में जानना चाहती है। वह आकांक्षा की तरह ही स्वतंत्र आत्मनिर्भर भी बनना चाहती है। आकांक्षा के रूप में उसकी दबी हुई इच्छायें परवान चढ़ती हैं किंतु उसे यह भी लगता है कि आकांक्षा के कारण ही आस्तिक कभी उसके करीब नहीं आ पाया। वह आकांक्षा के अक्स में अपने को देखने लगती है।

फिल्म पाखंडों व स्वार्थी रिश्तों को भी उधेड़ती हुई आगे बढ़ती है। घर के ताऊ जी कहने को तो अपने को 'ओपेन माइंडेड' बताते हैं किंतु संध्या की सहेली नाजिया के घर आने पर नाक भौं सिकोड़ते हैं क्योंकि वह मुस्लिम समुदाय से है। उसको चाय अलग कप में दी जाती है और तेरहवीं के हवन में जब वह संध्या के कहने से हवन सामग्री डालती है तो रिश्तेदारों की भाव–भंगिता बता देती है कि उन्हें कितना एतराज है। ताऊ जी के रूप (रघुवीर यादव) में दरअसल एक ऐसा चरित्र सामने आता है जो 'अटूट भारत' पढ़ता है, पक्के ब्राह्मणवादी मानसिकता के खोखले मूल्यों में विश्वास करता है और उसकी नैतिकता इतने ओछे स्तर की है कि वे आस्तिक की विधवा के इंश्योरेंस के रूपयों से भी छल करने की साजिश करते हैं। दरअसल यह चरित्र समाज के उन साम्प्रदायिक मध्यम वर्ग के चेहरे का प्रतिनिधित्व करता है जो प्रगतिशील होने को ढोंग करते हैं किन्तु ब्राह्मणवादी मानसिकता के अमानवीय मूल्यों से अपने को अलग नहीं कर पाते हैं।

फिल्म में पूजींवादी मूल्यों पर आधारित रिश्तों की बदसूरती को भी बखूबी दिखाया गया है। संध्या के नाम और उसका मृतक पति 50 लाख की पॉलिसी छोड़ गया था जिसे लेकर इंश्योरेंस वाले घार आते हैं तो लगता है कि पूरे परिवार को सांप सूंघ गया क्योंकि उसमें अकेली नॉमिनी संध्या ही होती है। तमाम तिकड़में लगाई जाती हैं और अंत में तरूण (आस्तिक के चाचा) अपने बेटे

आदित्य की शादी का प्रस्ताव संध्या से कर देते हैं। ससुर (आशुतोष राणा) समझ जाते हैं कि उनके छोटे भाई की नजर संध्या को मिलने वाले 50 लाख रूपयों पर है इसलिए वह अपनी पत्नी सास (शीबा चड्ढा) को असलियत समझाते हैं। वह समझ जाते हैं कि आदित्य को अपना होटल खोलना है और इसी के लिए यह सारी तिकड़में हैं। आस्तिक के मां बाप के रूप में आशुतोष राणा (राघवेंद्र) व शीबा चड्ढा (ऊषा) का अभिनय बेहद संजीदा है। फिल्म के यह दोनों चरित्र भी अपनी भावनाओं व रिश्तों के प्रति बहुत ईमानदार दिखाये गये हैं जो संध्या के दुःख को भी गहराई से महसूस करते हैं। फिल्म की कहानी आगे बढ़ती है और संध्या आदित्य के प्यार की परीक्षा लेने के लिए उससे झूठ कह देती है कि वह आस्तिक के बच्चे की मां बनने वाली है जिसके बाद आदित्य का असली रूप सामने आ जाता है। आदित्य अपनी मां को सब कुछ बताकर घर छोड़ कर चला जाता है। इधर संध्या और नाजिया अपनी योजना के अनुसार घर छोड़ देती हैं और संध्या चल देती है अपने नए जीवन की तलाश में।

फिल्म का अंत एक जर्बदस्त संदेश देता है। फिल्म में एक चरित्र 'दादी' का है जो एल्जाइमर की मरीज हैं किंतु संध्या अपने दिल की सभी बातें दादी से कहती है और ऐसा लगता है कि दादी सब कुछ समझ भी रही हैं। घर छोड़ने से पहले संध्या दादी को कहती है कि "दादी हम घर छोड़कर जा रहे हैं। इन 13 दिनों में आस्तिक को नया शरीर मिला है और हमें भी सब समझ में आ गया।" वह जो कहती है वही फिल्म का संदेश है "दादी सबको लगा कि हम पगला गए हैं पर लड़की लोगों को जब अक्ल आती है तो लोग उसे पगलैट कहते हैं। हम अपने फैसले खुद नहीं लेंगे तो दूसरे ले लेंगे।"

संध्या दादी को एक पत्र अपने ससुर के नाम दे जाती है जिसे सास (ऊषा) व पिता (शिवेंद्र) पढ़ते हैं तो जैसे आसमान से गिर जाते हैं। संध्या उनके नाम इंश्योरेन्स से मिला 50 लाख का चेक छोड़ जाती है और लिख जाती है कि अब वह नौकरी करेगी और आस्तिक की ही तरह उनका ख्याल रखेगी। ऊषा और शिवेंद्र फूट–फूट कर रोते हैं और दादी 'संध्या' कहकर आवाज लगाती हैं। यह सच्चे मानवीय रिश्ते थे। फिल्म के आखिरी दृश्य में संध्या सारी रूढ़ियों परम्पराओं को तोड़कर एक आजाद और आत्मनिर्भर जिन्दगी की तलाश में निकल जाती है। फिल्म में संध्या के रूप में सान्या मेहरोत्रा व आकांक्षा के रूप में सानिया गुप्ता का अभिनय बहुत सहज है। 'ताऊ' के रूप में रघुवीर यादव अपने सशक्त अभिनय से इस पात्र को फिल्म में जीवंत कर देते हैं।

मानव इतिहास में आपदायें

– संध्या षैली

इस पृथ्वी का इतिहास तो करोड़ों सालों का है लेकिन गर्म धरती घूमते घूमते, ठंडी होते होते करोड़ों साल लग गये और पानी में जीव का जन्म हुआ। उस पहले जीव से इन्सान तक आने में फिर लाखों साल लग गये। इस प्रकार आधुनिक मानव के विकास और उसके वंशजों के इस

धरती पर फैलने का इतिहास केवल कुछ हजार सालों का है। अब यदि मानव इतिहास में आपदाओं को जानने और समझने की कोशिश करें तो पहले तो यह जानना होगा कि आपदा का क्या मतलब है। अचानक आया भूकंप, पूरे शहर हो जला कर रख देने वाली आग, फूटता ज्वालामुखी, बाढ़, सुनामी, ये सब आपदायें मानव के लगभग 20000 साल के इतिहास में हुयी हैं और ये आपदायें दुनियां में राजनैतिक,सामाजिक, आर्थिक,साहित्यिक और धार्मिक परिवर्तन लाने में भी सहायक रही हैं।

इंडोनेशिया में एक झील है टोबा झील। इसके अंदर आज से करीब 75,000 साल पहले एक भयानक ज्वालामुखी का विस्फोट हुआ। जिसकी तीव्रता भूगर्भ शास्त्रियों के अनुसार 8 थी जो सबसे अधिक होती है। यह माना जाता है कि इस ज्वालामुखी की वजह से आइस एज जल्द खतम हुयी। लेकिन बड़ी संख्या मे इसने धरती के वनस्पति जगत को नुक्सान पहुंचाया और वनस्पतियों पर निर्भर जीवों और मानवों की भोजन प्रक्रिया को भी नुकसान पहुंचाया। इसी ज्वालामुखी का असर था कि अफ्रिका से मनुष्यों का दुनियां के दूसरे हिस्सों में विस्थापन शुरू हुआ। यह इसलिये माना जाता है क्योंकि ज्वालामुखी का समय और 60 से 70 हजार साल पहले अफ्रिका से शुरू हुआ मानवों का विस्थापन का समय लगभग एक जैसा ही है।

1500 ईस्वी पूर्व यानि आज से करीब 3500 साल पहले ग्रीस के क्रेट द्वीप मे एक ज्वालामुखी फूटा परिणामतः आज के ग्रीस के आस पास बसे कई मानव समुदायों के ठिकाने पूरी तरह से नष्ट हो गये और उन तमाम समुदायों के एक साथ आने से एक नये समाज ने जन्म लिया जिसे हम आधुनिक ग्रीक सभ्यता कहते हैं। कला, इमारतें, लिखने की पद्धति के साथ साथ कोइन ग्रीक भाषा का जन्म हुआ जिसमें बाइबिल के ओल्ड टेस्टामेंट का पहला अनुवाद हुआ। इस भयानक ज्वालामुखी का असर केवल ग्रीस पर हुआ ऐसा नहीं। चीन तक इसका असर हुआ। फसलें प्रभावित हुयीं। वहां के प्राचीन ग्रंथों में इसका जिक्र है जिसमे लिखा है कि कभी तीन सूर्य दिखते हैं तो कभी सूरज बेहद कमजोर दिखता है,जुलाई के महीने में बर्फ बारी हो रही है आदि। मिस्त्र मे भी इसका असर हुआ।

79 इस्वी में वेसीवुअस ज्वालामुखी के फूटने से पूरा का पूरा एक शहर पोंपेई उसमें दब गया। और इस पूरे शहर का पता 1500 साल बाद चला जब एक बार और इसी ज्वालामुखी के फूटने के बाद वहां पर सफाई चल रही थी।

1346 से 1353 के बीच मध्य एशिया से लेकर पूरे योरप तक प्लेग की बीमारी फैली जिसे ब्लैक डेथ का नाम दिया गया। यह सिल्क रूट से जाने वाले यात्रियों के माध्यम से पूरी दुनियां में फैली। यह कहा जाता है कि इस बीमारी ने यूरोप और एशिया की लगभग 60 प्रतिशत जनता को खत्म कर दिया। चूहों से फैले इस प्लेग ने कई सामाजिक विकृतियों को भी जन्म दिया जैसे कुछ निश्चित समुदायों को इसके लिये जिम्मेदार बताकर उनकी हत्यायें तक की गयीं। रोमा, यहूदी, कोढ़ के रोगी बड़ी संख्या में इसके शिकार हुये। यह कुछ कुछ वैसा ही था जैसे आज सत्ताधारी एक खास धर्म को आज की कोरोना महामारी के लिये जिम्मेदार बना कर अपनी जिम्मेदारी से पल्ला तो झाड ही लेते हैं साथ ही समाज को बदतरीन किस्म के अमानवीय मानसिकता का शिकार बना देते है।

1453–.54 मे समुद्र के अंदर स्थित द्वीप कुवेई में ज्वालामुखी फूटा। ऑस्टेलिया के कुछ उत्तर पूर्व मे यह समुद्र के अंदर का द्वीप है। इस जबरदस्त ज्वालामुखी ने फिर से पूरी दुनिया के पर्यावरण और मौसम को अपनी गिरफ्त में ले लिया। वैज्ञानिकों और भूगर्भशास्त्रियों के अनुसार इस ज्वालामुखी के फूटने से छोटे आइस एज की वापसी हुयी क्योंकि ज्वालामुखी की राख और धूंये से सूरज की किरणें धरती तक पूरी तरह से नहीं आ पा रहीं थीं। पूरी दुनियां में यहां तक कि स्वीडन, मेक्सिको में भी फसलें प्रभावित हुयीं। चीन मे उस वक्त मिंग राजाओं का शासन था साहित्यकारों ने लिखा कि वसंत में बर्फ गिर रही है। चीन के करीब छह राज्यों में लाखों लोग बर्फ के नीचे दब कर मर गये। लेकिन इस ज्वालामुखी का सबसे बड़ा राजनैतिक असर हुआ बाइजेंटाइन साम्राज्य की समाप्ति में। औटोमान तुर्क राजा मेहमद द्वितीय कांस्टेटिनोपोल का घेरा डाल कर पड़ा हुआ था। देखा गया कि प्रसिद्ध हेगिया सोफिया के गुंबद से ज्वालायें उठ रही हैं। ऐसी ही लपटें कांस्टेंटिनोपोल के दुर्ग की दीवारों से भी दिखीं। शहर में रहने वाले लोगों को और बाइजेंटाइन राजा को लगा कि यह आग घेरा डाल कर पड़ी तुर्क सेना ने लगायी है जबकि वह असली आग थी ही नहीं बल्कि आकाश में पसरे उस भयानक ज्वालामुखी की राख के कारण पैदा ऑप्टिकल इल्यूजन था। बाइजेंटाइन साम्राज्य को जिसे हराना और उसके दुर्ग पर कब्जा करना मुश्किल था कुल मिला कर इस पर जीत हासिल करने में इस सुदूर स्थित ज्वालामुखी ने मदद की और इस प्रकार बाइजेंटाइन साम्राज्य के स्थान पर 600 साल लंबा ऑटोमॉन साम्राज्य शुरू हुआ। इसका यह कतई मतलब नहीं है कि मेहमद द्वितीय की सेना जो उस वक्त की सबसे व्यवस्थित हथियार बंद और अनुशासित सेना थी और उसका राजा मेहमद द्वितीय सेना के साथ ही सैनिकों जैसा ही रहता,खाता था उसने कुछ नहीं किया। लेकिन उनकी खूबियों के साथ साथ प्रकृति ने भी उसका साथ दिया।

ज्वालामुखियों के साथ साथ सामाजिक परिवर्तनों में प्रकृति भूकंपों के माध्यम से भी सहयोग करती रही है। 1755 में पोर्तुगाल की राजधानी लिस्बन में एक जबरदस्त भूकंप आया जिसकी तीव्रता 9 थी इसकी तुलना हिंद महासागर में 2004 में आये भूकंप और सुनामी से की जाती है। इस भूकंप ने पूरे लिस्बन शहर को नेस्तनाबूत कर दिया। एक लाख के आसपास लोग मारे गये। इसके असर दूर दूर तक महसूस किये गये। ग्रीन लैंड से लेकर उत्तरी अफ्रिका तक। साथ ही इस भूकंप का महत्व यह है कि इसे योरप के पुर्नजागरण काल के साथ जोडा जाता है। क्योंकि इसीसे लोग यह सवाल करने लगे कि आखिर भगवान है भी क्या ? जब लिस्बन के किसी चर्च

को बचाया नहीं जा सका। दार्शनिकों की धर्मशास्त्रियों से बहस शुरू हो गयी। और दुनियां में फैला पुर्तगाली साम्राज्य खत्म होने के कगार पर आ गया। उसी वक्त वाल्टेयर ने अपनी रचनाओं में उस दर्शन पर सवाल उठाने शुरू कर दिये जो कहता था कि '' भगवान सब जानता है''। इसी दर्शन के आधार पर लोगों को भगवान के अस्तित्व पर सवाल उठाने से रोका जाता था और अंध भक्ति का भी यही आधार था। लेकिन अब तार्किक प्रश्न और वैज्ञानिक चेतना बढने लगी जिसने वास्तविकता को अधिक महत्व दिया जाने लगा। एम्यानुयेल कांट, रूसो जैसे दार्शनिको ंने इस भूकंप से प्रेरणा ली। और यूरोप को सांस्कृतिक, राजनैतिक, वैचारिक और औद्य ोगिक क्रांतियों की जोर ले जाना शुरू किया। तर्क या सवाल उठाना बेहद महत्वपूर्ण और किसी के कारण जाने बिना उस पर विश्वास न करने वाला व्यक्ति बडा माना जाने लगा। यहीं से जो उदारता, विकास, सहिष्णुता, बंधुत्व की भावना के विकास के साथ साथ शुरू हुआ शासन से चर्च को अलग रखने की यात्रा का विकास।

अब हम आते हैं हमारे समय के सबसे बड़े सामाजिक राजनैतिक परिवर्तन के लिये जिम्मेदार आपदा की ओर। 1784–85 में आइसलैंड के दक्षिण हिस्से में स्थित लाकी ज्वालामुखी के फूटने की घटना हुयी। इस ज्वालामुखी ने कई परिवर्तनों को जन्म दिया। पूरे योरप मे एसिड की बारिश हुयी, सूरज छिप गया और ठंड बढ गयी। परिणाम था अकाल, बीमारियां और मौतें। योरप की 25 प्रतिशत आबादी, 50 प्रतिशत जानवर और लगभग सारी फसलें बर्बाद हो गयीं। अफ्रिका और भारत में बारिश की कमी हो गयी और मिस्त्र की आबादी का छठवां हिस्सा 1784 के अकाल में खत्म हो गया। जो राजनैतिक परिवर्तन हुये उनमें एक तो यह था कि अमरीका की आजादी की लडाई थोड़ी लंबी खिंच गयी। यह वही समय था जब भूख से मरती फ्रांस की जनता को उसकी रानी मारी अंतोनियोत ने पूछा कि रोटी नहीं है तो केक क्यों नहीं खाते। जैसे आज हमारे हुक्मरान भूखी और ऑक्सीजन की जरूरतमंद मरती हुयी जनता को काढ़ा पीने और योगा करने के लिये कह रहे है। दरअसल इतिहास को सही संदर्भ के साथ याद रखना भी हमें आत्मविश्वास और लड़ने की ताकत देता है। फ्रांस के सामंती शासकों के साम्राज्यवादी मंसूबों के चलते फ्रांस की जनता पहले ही अमरीकी आजादी का संघर्ष और सेवन इयर्स वॉर के कारण निराश, हैरान परेशान थी कि उस पर शासकों ने अपने युद्ध के खर्चे पूरे करने और धन्नासेठों से लिये हुये कर्ज वापस करने के लिये जनता पर टैक्स लगा दिये। इस सबका नतीजा था कि सामाजिक विद्रोह ने जन्म लिया और समय प्रसिद्ध फ्रेंच क्रांति की ओर कूच करने लगा। इस प्रकार से एक प्राकृतिक आपदा ने वैश्विक साम्राज्यवाद के खिलाफ जनता मे जागृति लाने का काम किया। समाज में जनतांत्रिक , उदार और क्रातिकारी विचारों ने जन्म लिया जिससे सामंती व्यवस्था को खत्म करने और व्यक्ति की मुक्ति के साथ साथ भूमि का बंटवारा, उच्च कुल में जन्म लेने के लिये मिलने वाले विशेषाधिकार के खात्मे और उदारता, क्रातिकारिता,राष्ट्रीयता, समाजवाद, पूंजीवाद, नारीवाद और धर्मनिरपेक्षता जैसे विचारों का फैलाव होना शुरू हुआ। और साथ ही शुरू हुआ इस त्रासदी के लिये जिम्मेदार शासकों से सवाल करना।

हम आगे बढ़ते हैं। 1815 में हुआ तंबोरा ज्वालामुखी का विस्फोट। यह ज्वालामुखी भी ऑस्टेलिया के उसी इलाके में स्थित है जहां पर कूवेई है। यह क्षेत्र दरअसल दुनियां का सबसे अधिक ज्वालामुखियों वाला क्षेत्र है। 1815 का यह विस्फोट इतना जबरदस्त था कि इसके बाद इस

साल को सूरज के बिना का साल कहा गया। वनस्पतियों के नाश के साथ साथ बाढें, तूफानों के साथ साथ सूरज की गर्मी के कम हो जाने से फैलती बीमारियां जो दुनियां भर के देशों के साथ साथ भारत में भी फैली जैसे हैजा, इन्फुयेजा। लेकिन इस ज्वालामुखी की आपदा के बाद से शुरू होती है वैज्ञानिक खोजों की यात्रा। दुनियां भर में फैले अकाल के कारण चौपट हुयी फसलों के बाद आवश्यक फसलों के लिये आधुनिक उर्वरकों की खोज इसी दौरान हुयी।

एक बात और प्रकृति किस प्रकार मदद करती है इसका एक सबसे बडा उदाहरण सोवियत संघ का बचना है लाल सेना और पूरी रूसी जनता हिटलर और उसकी नाजी सेना को हराने में अपनी जी जान लगाये हुये थी, स्तालिन और उनके जनरल इंतजार कर रहे थे रूसी ठंड का जिसे वे अपना एक और जनरल मानते थे। वही हुआ। इस जनरल ने हिटलर की सेना की कमर तोड दी और बर्लिन में लाल झंडा लहराया।

अब हम आते हैं अपने देश के पडोसी देश बांगला देश के उदाहरण पर।

1970 में बंगाल की खाड़ी मे एक तूफान उठा था जिसका नाम था भोला तूफान। नाम भोला था लेकिन इसने बांगला देश जो उस वक्त पूर्व पाकिस्तान था मे भयानक तबाही मचाई। करीब 5 लाख मौतें हुयीं। लेकिन उस वक्त के शासकों ने सहायता करने या राहत कार्य का कोई काम नहीं किया। परिणाम मे बाद मे हुये चुनाव में मुजिबुर्ररहमान की अवामी लीग की जीत हुयी। लेकिन उसके बाद जो कुछ हुआ यह हमें ओर आपको सभी को मालूम है। लंबे संघर्ष के बाद भारत की सहायता से बांगला देश आज़ाद हुआ। उस वक्त हमारी सरकार ने यह नहीं कहा कि यह पूर्वी पाकिस्तान का आंतरिक मामला है हमें इसमें हस्तक्षेप नहीं करना है और हमारे अभी के प्रधान मंत्री भी बांगला देश के लिये आंदोलन करते हुये जेल गये पता नहीं कौन सी जेल गये और वे किसके खिलाफ आंदोलन कर रहे थे। उस वक्त उन्हे यह भी नहीं लगा कि वे आंदोलनजीवी हो रहे हैं या किसी दूसरे देश के आंतरिक मामलों मे ंहस्तक्षेप कर रहे हैं।

ये केवल कुछ आपदाओं के उदाहरण हैं, लेकिन दुनियां भर मे अब तक के मानव इतिहास में कई आपदायें हुयी हैं जिन्होने समाज को आगे बढाने में बेहतर बनाने में अपना योगदान दिया है।

इसके अलावा कई मानवनिर्मित आपदाओं का भी जिक्र किया जा सकता है जिसमें सबसे वीभत्स त्रासदी हिरोशिमा और नागासाकी के बाद भोपाल की थी, कोयना का बांध फूटने की, सुनामी, बंबई की प्रलयंकारी बाढ, उत्तराखंड की भयानक विभिषिका थी। ऐसी कई वीभिषिकाओं से सीखा जाता है उन्हे दोहराया नही जा सकता। प्रकृति पर और उसके आंतरिक परिवर्तनों पर हमारा जोर नहीं लेकिन उससे बचने के लिये प्रकृति ही कवच भी देती है जैसे सुनामी से बचने के लिये तटों पर अंदरूनी वनस्पतियों का जाल जिसे मेंग्रोव कहते हैं। लेकिन हम उसे भी अपने विकास की हवस के चलते याद न हीं रखते। और यह सब याद रखना होता है संबंधित देश प्रदेश के शासक वर्ग को। जिसके हाथ में कानून और कानून बनाने की ताकत होती है।

लेकिन भारत को अभी भी सीखना बाकी है। उत्तराखंड की दोबारा हुयी विभिषिका इसकी साक्षी है। आज हमारे देश को तमाम देश ऑक्सीजन भेज रहे हैं, दवाइयां, टीके के लिये कच्चा माल भेज रहे हैं कर ही रहे हैं मानवीयता को बचाने के लिये। लेकिन हम अपनी मानसिकता को सुध ाारेंगे क्या ? क्या हम पुर्तगाल और फ्रांस की जनता की तरह तर्क करके जातीयता, धर्माधता के दलदल से उबर पायेंगे या फिर इस बीमारी से उबरते ही उसी मंदिर मस्जिद की लडाई मे लग जायेंगे।

पूरी दुनियां कह रही है कि भारत में कोरोना की यह दूसरी लहर केवल और केवल अनियंत्रित भीड बढाने से हुयी चाहे वह कुंभ की भीड़ हो,शादियों की हो या फिर चुनावी रैलियों की हो। लेकिन आज भी कुभ खत्म नहीं हुआ। शादियां हो रही हैं। क्या हम किसी आपदा से सीख लेने के लिये तैयार ही नहीं हैं? क्या पिछले साल भर में नये ऑक्सीजन प्लांट खडे नहीं किये जा सकते थे?

ऐसा नहीं है कि नहीं किया जा सकता है। केरल जैसा प्रदेश जहां पर कोरोना ने सबसे पहले दस्तक दी वहां की वामपंथी सरकार ने समय पर कदम उठाते हुये अपने नागरिकों के जीवन की रक्षा करने के लिये ऑक्सीजन प्लांट लगा दिये और अ बवह राज्य दूसरे राज्यों को ऑक्सीजन दे रहा है। तमिलनाडु ने भी कुछ हद तक यह किया है। लेकिन बाकी देश में क्या हो रहा है? एक ड्रायवर बिना थके बिना रूके दिल्ली तक अपने ऑक्सीजन का टक लेकर चला आता है लेकिन उसे अस्पताल तक जाने में देर लग जाती है क्योंकि भाजपा के नेताजी को पत्रकारों को बुलाकर दिखाना था कि उन्होने यह ऑक्सीजन मंगाई है।

मध्यप्रदेश में भाजपा के मंत्रियों और उनकी सरकार के खिलाफ उनके ही विधायक नेता आंदोलन कर रहे है।। अरे भाई क्यों नौटंकी कर रहे हो। तुम्हारी सरकार है। एक चुनी हुयी सरकार को गिराकर खुद बिक कर तुमने जो सरकार बनायी वह काम नहीं कर रही है सीधी बात है दोषी तो तुम भी हो।

लेंसेट की हाल की रिपोर्ट बताती है कि केवल वेक्सिन से काम नहीं चलेगा इस वायरस को पूरी तरह से खत्म करना हमारा उद्देश्य होना चाहिये। और इसके लिये मेडिकल, विज्ञान जगत को तैयार रहना चाहिये। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने कहा है कि भविष्य के लिये स्वास्थ्य सेवायें अच्छी तरह से तैयार रहनी चाहिये। और इसके लिये वेरियेंट पहचानने से लेकर उसके संक्रमण से प्रभावितों को अलग ले कर जाने के साथ साथ वेक्सीन का सेकंड जनरेशन कार्यक्रम भी जलद शुरू करना चाहिये।

जन स्वास्थ्य के उपायों जैसे दोहरा मास्क, और स्वास्थ्य कर्मियों के लिये पी पी ई किट उपलब्ध कराना चाहिये।

यह ध्यान मे रखना है कि तीसरी वेव भी आने वाली है। इसलिये इन वैज्ञानिक और मेडिकल कामों की जरूरत है उसे पूरा करना ही होगा।

लेकिन यह बात भी सही है कि हमारे जैसे देश में जहां पर बडी संख्या में गरीब अपने छोटे छोटे घरों में घनी बस्तियों में रहते है वहां पर वे सोशल डिस्टेंसिंग का पालन कैसे करेंगे इसलिये जरूरी है कि सभी को जल्द से जल्द वेक्सीन लगे लेकिन अब जो बेशर्म तरीके से वेक्सीन की कीमतें सरकार ने तय कर दी हैं उससे इस देश में कैसे वैक्सिनेशन पूरा होगा?

सिस्टम के नाम पर अपने सर से जिम्मेदारी झटकने वाली सरकार और उसके मुखिया मोदी को न्यूजीलैंड की उस युवा प्रधानमंत्री से कुछ सीख लेनी चाहिये जिसने देश को अपने आप से उपर रखा। इसीलिये उसने अपने देष को इस भयानक बीमारी से मुक्त कर लिया आज वह दुनियां की सबसे लोकप्रिय शासक है।

लेकिन हमारे देश की शासक पार्टी भाजपा यह करेगी नहीं बल्कि वह और राह देखेगी लोगों के हारने की। वह और राह देखेगी लोगों के हताश होने की। यदि ऐसा नही होता तो बंगाल की रैलियां नहीं करती। चुनाव एक साथ कराये जाते। और उत्तर प्रदेश में आज भी पंचायत चुनाव नहीं हो रहे होते।

भाजपा फ्रांस की मारी अंतोनियोत है। यह जर्मनी के हिटलर और इटली के मुसोलिनी की वंशज है। इसके आर एस एस की शाखायें मुसोलिनी की बलिला मूवमेंट की नकल हैं। और ये इसीलिये सत्ता में आते हैं ताकि अपने देश को उसकी जनतांत्रिक और धर्मनिरपेक्षता, उदारता और बंधुत्व को खत्म कर सकें। ये सभी राजनेता अपने अपने देशों में जनता को कभी सांमंती चक्की में पीस कर तो कभी राष्टवाद की अफीम सुंघाकर सत्ता में पहुंचे थे। हमारे देश में भाजपा आज वह कर रही है। उसका ब्रीद वाक्य वही है जो हिटलर के गोयबल्स का था। ''झूठ को इतनी बार दोहराओ कि वह भीड़ के दिलो दिमाग में घर कर जाये'' यही वे कर रहे हैं। फ्रांस, इटली और जर्मनी की जनता ने अपनी गलतियों से सीख ले ली। क्या हम ये कर पायेंगे? आज सच दिखाने, मौत के सड़कों पर होते तांडव को दिखाने पर पाबंदी लगाने की तैयारी है। तमाम सोशल मीडिया टिवटर आदि के मेसेज हटाने के लिये केंद्र सरकार दबाव बना रही है। जिसकी अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर निंदा हो रही है।

यह समय है जब जनता फासिस्टों और उनके सहारे से जनता के खून में सना मुनाफा बटोरते पूंजीपतियों की असली साजिशें, इस देश को बर्बाद करने की साजिशें पहचान ले। वैसे तो प्रकृति के इस प्रकोप से ये भी बचेंगे नहीं यदि इस वायरस की दूसरी तीसरी, चौथी वेव आती रही। लेकिन जैसा कि मार्क्स ने कहा है कि मुनाफा यदि कई गुना हो तो पूंजी उस पूंजीपति की हत्या करने से भी नहीं चूकती।

इसलिये इस क्रूर पूंजीवादी फासिस्टी निज़ाम से जल्द मुक्ति पाने में ही इस देष की जनता की बेहतरी है। यही इस बार दुनियां में आई इस प्राकृतिक आपदा का सबक है और हमें यह ज्ञान देना इसका योगदान है।

कविता

कोरोना को पाती

– मधु गर्ग

ये स्टैच्यू स्टैच्यू कब तक खेलोगे कोरोना ?
जिंदगी को हॉल्ट में कब तक रखोगे कोरोना ?

बस अभी तो घूमा था मशीन का पहिया
बस अभी तो ली थी चक्की ने अंगड़ाई
बस अभी तो घर में आये थे कुछ दाने
जिन्हें ले भागी थी नन्ही चुहिया
बस अभी तो पतीली से खुशबू थी आई
कि तुमने क्यों फिर हॉल्ट कर दिया ?
क्यों जिंदगी को फिर से कैद किया ??

बस अभी अभी तो बागों में रौनक थी आई
जिंदगी बस रुकते रुकते पटरी पर थी आई
बस अभी अभी कुछ हौंसले थे उग आये
कुछ आशा और सपने भी जग पाये
कि तुमने फिर क्यों हॉल्ट कर दिया
जिंदगी को दीवारों में फिर क्यों कैद कर दिया ??

बस अभी तो दरवाजे से घुस आई थी पुरवाई
बस अभी तो आंखों में उतरी थी अमराई

बस अभी तो नन्हे पांवों ने हरी घास को चूमा था

बस अभी अभी जिंदगी का पहिया घूमा था

कि फिर क्यों दीवारों में कैद किया ?

क्यों फिर जिंदगी को हॉल्ट किया ?

बस अब जिंदगी नहीं मौत को हॉल्ट करो कोरोना ...

बस अब इस दुनिया को अलविदा कहो कोरोना

आस्थाका कुम्भ कोरोना में डुबकी

– सुनीता पांडे

उत्तर प्रदेश राज्य मे जब कोरोना मृतकों को जलाने के लिए लकड़ियां तक मुहय्या नही हो पा रही थी तब देवभूमि कहे जाने वाले उत्तराखंड राज्य मे सरकार कुम्भ आयोजन मे हेलिकॉप्टर से पुष्प वर्षा करती नजर आई। मेला आयोजन की तमाम खामियों के दौरान मुख्यमंत्री ने महिलाओं को निशुल्क कुम्भ यात्रा कराने का एलान तक कर दिया। लाखो लोगों के कुम्भ प्रवेश ने शासन प्रशासन की परेशानी बढ़ा दी। खुद पुलिस प्रशासन ने माना कि अनियंत्रित भीड़ को सम्भालना और कोरोना दिशा निर्देशौं का पालन कराया जाना मुश्किल हो गया है। कोविड 19 महामारी के बदतर हालात के बीच एक अप्रैल 2021 से ३० अप्रैल तक उत्तराखंड राज्य के हरिद्वार मे महाकुम्भ का आगाज हुआ। राज्य मे भाजपा के चार सालों की त्रिवेंद्र सिंह रावत सरकार की नाकामियों को छुपाते हुए नए मुख्य मंत्री बने तीरथ सिंह रावत ने इस आयोजन को भव्य रूप से मनाने की घोषणा की। केन्द्र की बिना सहमती काम ना करने वाली राज्य सरकार भला आस्था के इस कुम्भ को अपने राजनीतिक लाभ के लिये भुनाने मे चूक कैसे कर सकती थी, फिर उनके

आकाओ को 5 राज्यों के चुनाव मे इस महाकुम्भ का महिमा मंडन कर वोट जो बटोरने थे। वक्त की नजाकत भांपते हुए उच्च न्यायालय नैनीताल को सख्ती करते हुए मेले मे आने वाले तीर्थ यात्रियों को 72 घण्टे की आर टी पी सी आर रिपोर्ट लाने की अनिवार्यता और कोरोना दिशा निर्देशौं का पालन कराये जाने का आदेश जारी करना पड़ा। फिर भी पहले ही शाही स्नान के बाद ही 400 जाने माने सन्त कोरोना पोजिटिव पाये गये। लाखों यात्रियों के चालान काट करोडों की आय अर्जित करने को पुलिस प्रशासन ने बड़ी उपलब्धि मे गिनाया। बिगड़ती स्तिथि देख निरंजनि और आनन्द अखाड़ों ने 17 अप्रैल को ही कुम्भ समाप्ति की घोषणा भी कर दी,तब भी मेला प्रशासन ने लाखों तीर्थ यात्रियों को डुबकी लगाने से रोके ना जाने का एलान कर दिया ।देश मे कर्फ्यू जैसे हालातों मे अखाड़ों ने विशाल जुलुस निकाले। मास्क और सामाजिक दूरी के नियमों की धज्जियां उड़ाई गई। हजारो की तादाद मे यात्री संक्रमित हुए, कई सन्त कोरोना की भेंट चढ़ गए, 11 मार्च तक ही 33 से ज्यादा पुलिस कर्मी कोरोना संक्रमित हुए,कई पुलिस फोर्स वापस भेजनी पडीं। दर असल धर्म और गंगा की आस्था पर जुटाई गई भीड़ को वोटों में इस्तेमाल करने वाली भाजपा सरकार के लिये ये एक प्रयोग था। जबकि कुंभ की भूमिका कोरोना फैलाने में कारगर साबित हुई। जानकारी के मुताबिक कुम्भ समापन से लौटे बिहार के विदिशा के कई इलाकों के 83 तीर्थ यात्रियों मे से 22 लापता है जबकि बांकी 61 लोंगो की रिपोर्ट कोरोना पॉजिटिव आई है। कुम्भ से उत्तराखण्ड समेत विभिन्न राज्यों यहां तक की विदेशी मेहमानो की घर वापसी अब कोरोना की होम डिलीवरी कर रही है, जिसका पूरा श्रेय केन्द्र और राज्य की भाजपा सरकार को जाता है। हरिद्वार जिले में स्वास्थ्य दशाओं का हाल ये है कि जिला अस्पताल में 36 वेंटिलर में से 32 वेंटीलेटर शो पीस बने हैं उन्हें आपरेट करने केलिए लोग तक ही नहीं हैं! खुद स्वास्थ्य मंत्री ने एक बैठक मे कहा कि प्राइवेट अस्पतालों को लाभ पंहुचाने के लिए जिला अस्पताल निष्क्रिय पड़े हैं। कोविड़ 19 पर वैज्ञानिकों की इस संस्तुति को भी भाजपा सरकार द्वारा पूरे तौर पर नजरंदाज किया गया कि कोविड की दूसरी लहर और भी भयावह हो सकतीं है। तबलीगी जमात को कोरोना बम कहकर नफरत फैलाने वाले खुद कुंभ को एटम बम बनाने मे लगे रहे। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय की एक हाई लेवल टीम मेले में आई, जिसके अनुसार 10 से 2० तीर्थ यात्री और स्थानीय लोग हर दिन कोरोना पॉजिटिव निकले। मेला प्रशासन के पास खुद कोरोना संक्रमण से होने वाली मौतों का आंकड़ा नहीं है। ना उचित टेस्टिंग, आइसोलेसन सेंटरों का भारी अभाव, आक्सीजन की अनुलब्धता के बीच महाकुंभ का समापन ३० अप्रैल को हो गया।कोरोना काल मे ऐसे भव्य आयोजन कर महामारी फैलाने और संक्रमण से हुई मौतों के लिए केंद्र और राज्य की भाजपा सरकार पूरी तरह जिम्मेदार है।

फॉलो करें:

फेसबुक: facebook.com/AIDWA

वेबसाइट: aidwaonline.org